Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, OCT-NOV, 2019, VOL- 7/36

पं0 गंगारत्न पाण्डेय के उपन्यास 'एक और नीलकण्ठ' में नया वैचारिक प्रयोग

प्रीति पटेल
(शोधार्थी) (हिन्दी विभाग) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर उ0प्र0

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

पं0 गंगारत्न पाण्डेय जी हिन्दी साहित्य की सेवा में आजीवन समर्पित रहे हैं उन्होंने हिन्दी प्रेमी जनों को अनुपम निधि के रूप में असाधारण साहित्य समर्पित किया है। जिसमें 'एक और नीलकण्ठ' (उपन्यास), 'मेवाड़ मुकुट' (खण्ड काव्य), 'पुण्य पुराकृत' (कहानी संग्रह) , 'मृगजल' (नाटक), 'तेरे सानिध्य में' (काव्य संकलन), 'नये संदर्भो में' (काव्य संकलन), 'इतिहास के नेपथ्य में' (दो भाग उपन्यास), 'काया कन्था' (कहानी संकलन), 'निहारा पथ न आये तुम' (गजल संग्रह), 'देवव्रत' (आत्मकथा) आदि है। आप अंग्रेजी साहित्य के अध्येता थे तथा भारतीय पौराणिक साहित्य के प्रकाण्ड पंडित थे।

पाण्डेय जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में बैसवारा जनपद की वीर प्रसूता भू को धन्य किया। उनकी प्रारम्भिक कविताओं का विशय राश्ट्रप्रेम, सुधार, भारतीय संस्कृति पर गर्व, जीवन–संघर्श और आध्यात्म एवं दर्शन रहा है। जिनमें परवर्ती रचनाओं में अध्यात्म एवं दर्शन का प्राधान्य होता गया। छोटे–छोटे हास्य व्यंग्य और सूक्तियों के रूप में सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की विसंगतियॉ और विद्रूपताएँ अभिव्यक्ति पाती रही है।

पाण्डेय जी के उपन्यास 'एक और नीलकण्ठ' में दार्शनिक सुकरात के जीवन एवं इतिहास को संजोये हुए उनके विचारों को प्रमुखता से प्रस्तुत करने का अनुपम प्रयोग है। इसमें इतिहास के सत्य के साथ मंगलकारी कल्पना प्रचुर मात्रा में है इसमें दर्शन को उच्चतम भावभूमि पर पहुॅचाते हुए, आनन्द की प्राप्ति में मनभावसिक्त हो जाता है।

चार सौ से अधिक पृश्ठों में इस वि ाल उपन्यास की रचना के लिए लेखक ने दो बार यूनान की यात्रा कर प्राचीन स्थलों एवं वहॉ के लोगों के साथ वार्तालाप किया। यूनान में 'साक्रेटीज' नाम से तथा भारत में सुकरात के नाम से विख्यात इस उपन्यास के नायक है। उनके उदात्त चरित्र की प्रस्तुति का प्रधान उद्देश्य तथा वर्ण्य विशय रहा है। वे एक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

महान दार्शनिक, चिन्तक, सहृदय और दिव्य मानव के रूप में चित्रित हुए है जिनमें आत्मविश्वास, सत्यनिश्ठा, अपरिग्रह, संयम, स्वाभिमान, वीरता, परोपकारिता, पर दुःख कातरता की प्रतिमूर्ति जैसे गुण दिखाई देते है। जिनका जन्म एथेन्स की देवी एथीना के आशीर्वाद से मूर्तिकार शुभ्रनिकश एवं फेनरीता दम्पती के घर में होता है। देवी के स्वप्न में आदे ाानुसार माता–पिता ने कभी शुक्रतेज पर अपना अधिकार नहीं जताया। आजीवन वे ध्यानमग्न हो जाने वाले तथा अपने सान्निध्य में आने वाले लोगों को वैचारिक सद्भाशण से अभिभूत करते रहे तथा राज्य पर आयी विपत्तियों जैसे–युद्ध, महामारी, आन्तरिक संघर्शो के निवारण में तन मन से सन्नद्ध रहे।

डेल्फी के अपोलो देव मन्दिर की देववाणी में क्षीरकेन के प्रश्न–'यूनान का सर्वाधिक बुद्धिमान व्यक्ति कौन है ? उत्तर में– शुक्रतेज, शुक्रतेज, शुक्रतेज'' ने शुक्रतेज को ईश्यालु, अहंकारी, ज्ञान विक्रेताओ का शत्रु बना बैठा। जिसके परिणाम स्वरूप अन्त में शुक्रतेज के विरूद्ध दिवोपीठेश ने शड़यंत्र रच डाला जिसमें शुक्रतेज के मित्र जो तत्कालीन राज्याध्यक्ष अनातीश को भी भागी बना डाला। जिसमें पांच सौ न्यायाधीशों के समक्ष लगाये गये झूठे आरोपों में–शुक्रतेज द्वारा एथेंस के नागरिकों को पथभ्रश्ट करना, धर्म को झूठा सिद्ध करना, राज्य की देवियों को न मानकर किंदेवात्माओं की स्थापना, देवी एथीना का उपहास करना आदि थे। जिनका शुक्रतेज ने बड़ी बुद्धिमत्ता से खण्डन किया। पांच सौ न्यायसभ्यों में से तीन सौ साठ न्यायसभ्यों ने मृत्युदण्ड का समर्थन किया। शुक्रतेज को मृत्युदण्ड दिया जाता है। वे सहर्श अपने राश्ट्र के गौरव के लिए मृत्युदण्ड स्वीकार करते है।

लेखक को 'एक और नीलकण्ठ' की भूमिका में पाण्डेय जी ने लिखा है''.....यह कथा मात्र भारीरधर्मा जीवन की गाथाओं से भिन्न है। भिन्न है किन्तु विपरीत कदाचित नहीं।'' इसमें उपन्यासकार ने एक सत्यनिश्ठ, लोक परायण, परार्थचिन्तक, तत्वान्वेशी महामानव की सांसारिक यात्रा में पड़ने वाले पड़ावों की झलक प्रस्तुत करते हुए आत्मशोधन की ओर प्रेरक बनने का कार्य करती है। कृतिकार का दृश्टिकोण है–

''यह यात्रा लोकरंजन भी होती है और लोक शोधक भी होती है। निश्चय ही लोकरंजन की अपेक्षा लोक जीवन का सशोधन उसका प्रधान उद्देश्य होता

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। यह संशोधन उपदेश द्वारा कम, व्यावहापरिक आत्मदृश्टान्त द्वारा अधिक सिद्ध होता है।''[1]

शुक्रतेजने आत्मोन्नति के मार्ग को अपनाकर व्यर्थ के दिखावे और देवों के लिए बहुमूल्य उपहार, चढ़ावे का विरोध किया है। उनके मत से सात्विक भावनाओं के मेल से श्रद्धाभावयुक्त ईश्वर से सम्पर्क करो वे निश्चित ही तुम पर कृपा करेंगे।

''जीतो वत्स जीतो
मन में जीम बैठी थोथी गर्व भावना को।
जानते हो न ?
नम्रता विहीन रूखी, झूठी अहं भावना
शुभ नहीं होती कभी।
हम मर्त्यो की उपलब्यिों से परे है
अकथनीय अप्रमेय शक्ति–साका जिनकी,
उन अमर देवों में कभी नहीं देखी गई
गर्व की, गरूर की रूखी अहंभावना।''[2]

अनावश्यक आडम्बर तो व्यक्ति की जीवनशैली एवं उसके विचारों तक को प्रभावित करते है। प्राकृतिक रूप से ई वरीय देन को, उसके न्याय को अटल सत्य मानकर अपनी भूमिका इस जगत में निभाना जीव मात्र का परम कर्तव्य होना चाहिए।

''व्यक्ति अपना तथा अपने राश्ट्र का कल्याण अपने विचारों, अपने क्रिया कलाप से ही कर सकता है, बन्धु अनातीश! अपनी सज–धज से न अपना कल्याण कर सकता है और न अपने राश्ट्र का। समरभूमि जा रहे सैनिक की सामरिक सज्जा अनिवार्य है, आवश्यक है, पर राजनेता की शारीरिक सज–धज एक आडम्बर है, छालावा है।''[3]

जैसा कि किसी साहित्यकार का कार्य अपने समसामयिक परिवेश का व्यक्तिमन की भावनाओं का चित्रण कर जनमानस को अवगत कराना होता है। आज हम भाक्ति की, विकास की भ्रामक मरीचिका के पीछे अन्ध दौड़ लगा रहे हैं, जिसको अपने लक्ष्य का स्वयं पता नहीं होता है बस यही विचार हावी रहता है कि जो आज मेरी परिस्थितियॉ है वो

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शायद कल जरूर सुधर जायेंगी। इस बात से अनजान रहते है कि कल फिर से कोई न कोई नयी परिस्थिति आकर अपना समाधान मांगेगी। इसी अंधी दौड़ में हम कब और कहॉ शान्ति पायेंगे, यह ज्ञात नहीं होता है।

''आज हम परिवेश की भ्रामक शान्ति से प्रसन्न हो रहे है पर शान्ति है कहॉ देवी ? क्या आपका, राज्याध्यक्ष महोदय का मन मस्तिश्क शान्त है। परिवेश की शान्ति तो भमशान से अधिक कहीं नहीं होती, देवी! हमने वैसी शान्ति की कामना तो कभी नहीं की। एथेंस सद्गुण–सम्पन्न शौर्य का उपासक रहा है। शान्ति का आग्रह तो किंपुरूशता का आवरण भी बना लिया जाता है।''[4]

अधिकांश प्रबुद्ध वर्ग जो भौतिक साधनों के लोलुप होते है वे जो इन्द्रियातीत है उस पर विश्वास ही नहीं करते है उनका मानना है कि जो इन्द्रियातीत होता है वह तो अज्ञेय है उसे मानकर हम आचरण नहीं कर सकते। परन्तु इस सम्पूर्ण रहस्यमयी भाक्ति सम्पन्न जगत का निर्माता यदि इन्द्रियातीत है तो उसके निर्माण का अस्तित्व तो हमारे सम्मुख हैय उसे कोई नहीं बदल सकता है।

''यह विश्व हमारी इन्द्रियों की शक्ति सीमाओं में आबद्ध नहीं है, महोदय! जो इन्द्रियातीत है उसके अस्तित्व में शंका करना ही सबसे बड़ा भ्रम है। स्वयं हमारे शरीर के भीतर बहुत कुछ है जो इन्द्रियातीत है। हाँ यह सत्य है कि जो इन्द्रियगम्य नहीं है वह वाणी से परे है क्योंकि वाणी भी तो एक इन्द्रिय–विशय ही है।''[5]

पाण्डेय जी हिन्दी के साथ–साथ संस्कृत के भी बड़े विद्वान रहे हैं उन्होंने अनेक भलोकों एवं गद्य खण्डों की भी रचना की है। देव परायणता तो मानव जीवन का विशेश अंग रही है। ईश्वर के अस्तित्व की कामना उसकी पूजा अर्चना मानसिक सन्तोश एवं सुख देती है। ईश्वर की वंदना हम किसी भी रूप में करें वह आत्मिक तोश ही प्रदान करती है। सूर्यदेव को समर्पित, सृजित भलोक दृश्टब्य है–

निर्मलं निर्विकल्पं च निर्विकारम् निरामयम्।
जगत्कर्ता, जगद्धर्तस्त्वां सूर्य प्रणमाम्यहम्।।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लोहित वर्ण संकाशं सर्वलोक पितामहम्।

सर्वव्याधि हरं देवं त्वां सूर्य प्रणमाम्यहम्।।[6]

शुक्रतेज को मृत्युदण्ड दिया जाता है, उनके समर्थक आत्मीय जनों में निराशा और विक्षोभ भर जाता है जिसे वे अत्यन्त शान्त भाव मृत्यु की विवेचना करते है तथा सबको प्रसन्न मन रहने का आग्रह करते है।

''मृत्यु को आप एक भयावह दुःखद विभीशिका मानते हैं पर मृत्यु विभीशिका है या वरदान यह यथार्थतः कौन जानता है ? फिर भी इतना तो स्पश्ट और निश्चित है कि मृत्यु चिरनिद्रा है, ऐसी निद्रा जो कभी टूटती नहीं, और जिसमें अच्छे बुरे किसी प्रकार के सपनों के लिए स्थान नहीं है अर्थात मृत्यु चिरविश्रान्ति है। यह धारणा सत्य है तो मृत्यु विभीशिका नहीं, सुखद वरदान है और वह चिरविश्रान्ति का वरदान मुझे मिलने जा रहा है।''[7]

शुक्रतेज की यह जीवन गाथा, विचारगाथा पुराणों में वर्णित नीलकण्ठ महादेव के समकक्ष मानकर उन्हें भी नीलकण्ठ की उपाधि से पाण्डेय जी ने विभूशित किया है। राश्ट्र के हित के लिए, जीवमात्र की रक्षा के लिए, आत्मसम्मान के लिए, शरणागत की रक्षा के लिए हलाहल का पान करने वाले नीलकण्ठ की गरिमामयी उपाधि से विभूशित होते है। कथा का भाुक्रतेज के विशपान से मृत्यु के बाद पाठक के मन में विशाद की छाया छा जाती है, जो एथेंस में जनाक्रोश, अपराधी दण्डनायकों को एथेंस से बहिश्कृत किये जाने के साथ ही समाप्त हो जाती है, जो मन को संतोश देती है।

''लम्बकेशिन ने दाह संस्कार किया। भस्मावशेश एक कलश में बन्द कर धरती में गाड़ दिए। शुक्रतेज का पार्थिव रूप निःशेश हो गया और उसके साथ निःशेश हो गयी एथेंस की वह बौद्धिक, आध्यात्मिक गुरूता जो दूर–दूर के अनेक ज्ञान पिपासुओं को आकर्शित करती थी।''[8]

और भोश रह गये शुक्रतेज के तीन शिश्यों –जेनाफोन, प्लेटो और कवीश की सारगर्भित उक्तियों, सिद्धान्तों, विचारों के संकलन, जो शुक्रतेज की वाणी द्वारा आज भी ढ़ाई हजार वर्श बाद भी ज्ञान पिपासुओं को तोश और मार्गदर्शन प्रदान करते है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एक और नीलकण्ठ उपन्यास में पं0 गंगारत्न पाण्डेय जी ने उपन्यास के सभी तत्वों का सम्यक निर्वाह करने में पूर्ण सफल हुए हैं। उनका सम्पूर्ण साहित्य किसी न किसी विचार, भावना, समस्या, यथार्थ सांस्कृतिक गुरूता आदि का चित्रण करते हुए देश के सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक एवं आध्यात्मिक विशयों पर लेखनी चलाते हुए पाठक का मस्तिश्क विचारोदीप्त करता है। वे स्पश्ट रूप से 'इतिहास के नेपथ्य में' नामक उपन्यास की भूमिका में कहते हैं→

''मैं पाठकों के सतही मनोरंजन मात्र के लिए लेखनी नहीं उठाता। मेरे लिए साहित्य–सेवा शब्दब्रहम की आराधना है इस आराधना में किसी इतर भाव का सम्मिश्रण अस्वीकार्य होना ही चाहिए।''[9]

शब्द ब्रहम के आराधक पं0 गंगारत्न पाण्डेय जी का हमारे बीच से प्रयाण मई 2015 में हो जाने से हिन्दी साहित्य के आजीवन पुजारी की साहित्य रूपी भेंट से पाठकगण वंचित हो गये।

संदर्भ–सूची

'एक और नीलकण्ठ' की भूमिका से साभार
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 49
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 75
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 124
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 183
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 187
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 361
'एक और नीलकण्ठ' पृ0सं0 402
''इतिहास के नेपथ्य में'' की भूमिका से साभार

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies